



करवा चौथ व्रत कथा

बहुत समय पहले इन्द्रप्रस्थपुर नामक स्थान में वेदशर्मा नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। उनका विवाह लीलावती नाम की स्त्री से हुआ था। उनके सात पुत्र और एक पुत्री थी, जिसका नाम वीरावती था। सात भाइयों की अकेली बहन होने के कारण वीरावती अपने माता-पिता के साथ-साथ अपने भाइयों की भी बहुत प्रिय थी। समय आने पर वीरावती का विवाह एक योग्य ब्राह्मण युवक के साथ कर दिया गया। विवाह के बाद एक बार वीरावती अपने मायके आई हुई थी। उसी समय करवा चौथ का व्रत आया। वीरावती ने अपनी भाभियों के साथ अपने पति की लंबी आयु और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना से करवा चौथ का व्रत रखा। वीरावती ने पूरे दिन श्रद्धा से व्रत रखा, लेकिन वह पहली बार इस कठिन व्रत को कर रही थी। दिन बीतने के साथ उसे बहुत अधिक भूख और कमजोरी महसूस होने लगी। भूख और प्यास के कारण उसकी हालत इतनी खराब हो गई कि वह मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी। अपने प्रिय बहन की यह हालत देखकर उसके सातों भाई बहुत दुखी हुए। वे अपनी बहन को इस अवस्था में नहीं देख पा रहे थे। वे जानते थे कि वीरावती पति की लंबी आयु की कामना से व्रत कर रही है और चंद्रमा के दर्शन किए बिना भोजन नहीं करेगी। भाइयों ने अपनी बहन की परेशानी देखकर उसे व्रत खोलने के लिए एक उपाय करने का निश्चय किया। उनमें से एक भाई कुछ दूरी पर स्थित वट के वृक्ष पर चढ़ गया। उसने छलनी और दीपक अपने साथ रखा। बाकी भाई वीरावती के पास गए और उससे कहा कि चंद्रमा निकल आया है। कमजोरी के कारण परेशान वीरावती भाइयों की बात पर विश्वास कर बैठी। वे उसे छत पर ले गए। दूर वट के वृक्ष के पीछे छलनी में रखा दीपक दिखाई दे रहा था। वीरावती को लगा कि चंद्रमा वृक्ष के पीछे निकल आया है। वीरावती ने उस दीपक को चंद्रमा समझकर उसे अर्घ्य दिया और अपना व्रत खोल दिया। इसके बाद उसने भोजन करना शुरू किया। लेकिन भोजन करते समय उसे एक के बाद एक अशुभ संकेत मिलने लगे। पहले कौर में उसे बाल मिला। दूसरे कौर के समय उसे छींक आ गई और तीसरे कौर के समय उसे ससुराल से बुलावा आ गया। वीरावती अपने ससुराल पहुँची तो वहाँ उसने अपने पति को मृत अवस्था में पाया। पति की यह अवस्था देखकर वह बहुत दुखी हो गई। वह रोने लगी और सोचने लगी कि करवा चौथ के व्रत में उससे कोई बड़ी भूल हो गई है। वीरावती अपने पति के वियोग में विलाप करती रही। उसकी पीड़ा और दुख को देखकर देवी इन्द्राणी वहाँ आई और उसे सांत्वना दी। वीरावती ने देवी इन्द्राणी से अपने पति की मृत्यु का कारण पूछा और उनसे अपने पति को फिर से जीवित करने की प्रार्थना की। तब देवी इन्द्राणी ने वीरावती को बताया कि उसने चंद्रमा को सही प्रकार से अर्घ्य दिए बिना ही व्रत खोल दिया था। इसी कारण उसके पति की असामयिक मृत्यु हुई। देवी इन्द्राणी ने वीरावती को सलाह दी कि वह श्रद्धा और नियम के साथ करवा चौथ का व्रत करे और वर्ष की अन्य चौथ के व्रत भी विधिपूर्वक रखे। उन्होंने उसे विश्वास दिलाया कि श्रद्धापूर्वक व्रत और धार्मिक आचरण करने से उसे अपने पति की पुनः प्राप्ति होगी। वीरावती ने देवी इन्द्राणी की बात मान ली। उसने पूरे विश्वास और श्रद्धा के साथ व्रतों का पालन किया और सभी आवश्यक धार्मिक विधियों को पूरा किया। कथा के अनुसार, इन व्रतों से प्राप्त पुण्य के प्रभाव से अंततः वीरावती को अपने पति की पुनः प्राप्ति हुई। इस प्रकार उसका वैवाहिक जीवन फिर से सुखमय हो गया। करवा चौथ की यह कथा पति-पत्नी के प्रेम, श्रद्धा, संकल्प और व्रत के प्रति निष्ठा का संदेश देती है। इसी कारण करवा चौथ के अवसर पर अनेक महिलाएं श्रद्धापूर्वक यह व्रत कथा सुनती या पढ़ती हैं और चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद अपना व्रत पूर्ण करती हैं।

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी।

अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें।

Bhakti Margdarshan

